* ओ३म् *

दो देवियों का विवाद

किस मार्ग पर चलोगे ?
श्रेय पर या प्रेय पर !

यह पुस्तक

श्रीमती शिव देवी जी
धर्मपत्नी स्वर्गवासी श्री गुरुदासराम साहनी
बैरिस्टर मरी रोड, रावलपिण्डी
ने धर्मार्थ छपवाई ।

—:o:—

प्रकाशक—

श्री १०८ स्वामी प्रकाशानन्द स० जी महाराज

निवेदन

श्री १०८ स्वामी प्रकाशानन्द जी महाराज आर्य समाज़ के प्रसिद्ध संन्यासी हैं। आपने अपना सारे का सारा जीवन प्रभु भक्ति और परोपकार के अर्पण कर रखा है। यह सुन्दर पुस्तक, जो आपके हाथ में है, इसी उद्देश्य से लिखी गई थी, ताकि कुमार्ग पर पड़े हुए युवकों को सन्मार्ग पर लाया जाय और शोकातुर संसारियों को प्रभु-प्रेम और परोपकार का अमृत जल पिला कर उनका कल्याण किया जाय। आप इस पुस्तक में पढ़ेंगे, कि श्रेय मार्ग और प्रेय मार्ग पर चलने वालों की क्या अवस्था होती है और अंत में अनुभव करेंगे कि प्रेय-मार्ग चाहे कितना भी चित्ताकर्षक हो, परन्तु श्रेय मार्ग ही वास्तविक रूप में मनुष्य का कल्याण करने वाला है।

'मिलाप' कार्यालय
१ मार्च १९३८

खुशहालचन्द 'खुर्संद'

समर्पण

यह "दो देवियों का विवाद" नामक पुस्तक-पुष्पावली श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य यतीन्द्रवर देशहितैषी विद्वज्जनशिरोमणि श्री १०८ पूज्यवर श्री स्वामी महानन्द जी महाराज के पवित्र चरण-कमलों में समर्पित की जाती है !

समर्पयिता

सारे संसार का शुभचिन्तक

प्रकाशानन्द सरस्वती

दो देवियों का विवाद

और

एक युवा पुरुष के हृदय का भाव ।

"परोपकारः पुण्याय पापाय स्वार्थजीवनम् ।"

अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयस्ते उभे नानार्थे पुरुषं सिनीतः । तयोः श्रेय आददानस्य साधु भवति हीयतेऽर्थाद्य उ प्रेयो वृणीते ॥

कठोपनिषद् ।

श्रुति का गूढ़ भावार्थ

निःश्रेय कल्याण का रास्ता कुछ और है और प्राकृतिक पदार्थ (कुदरती चीज़ों) का रोचक या

लुभाने वाला मार्ग दूसरा ही है । इन्हीं दोनों को हम अलग अलग श्रेय 'सुमति' और प्रेय 'कुमति' इन दो नामों से कहेंगे। ये दोनों श्रेय और प्रेय या सुमति और कुमति अलग अलग रुचिवाले मनुष्यों को वासना की डोर से रात दिन. जकड़े रहती हैं। उनमें श्रेय 'सुमति' को अङ्गीकार करने वाले का भला होता है और जो प्रेय 'कुमति' को अपनी प्यारी मानता है वह मोक्ष अर्थात् परमानन्द की प्राप्ति और सब दुःखों की निवृत्ति, अपने जीवन के मुख्य प्रयोजन से हट भ्रष्ट हो जाता है। इसी को एक रूपक में बाँध यहाँ स्पष्ट कर दिखाते हैं। भक्त तुलसीदास जी ने कहा है "जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना। जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना ॥" इसी पर किसी कवि का भी कथन है—सर्वस्य द्वे सुमतिकुमती सम्पदापत्तिहेतू:—सम्पत्ति और विपत्ति का हेतु सुमति और कुमति मनुष्यमात्र के हृदय-रणक्षेत्र में रात दिन संग्राम या गहरी लड़ाई किया करती हैं।

इसी प्रयोजन को स्पष्टरूप से कथन किया जाता है।

सुमति और कुमति का विवाद

परम पिता से श्रद्धा, विश्वास, भक्ति और प्रीति का बढ़ना, सर्वव्यापक से अपना दृढ़ सम्बन्ध स्थापन करना और उसके रास्ते पर चलना ही सुमति अर्थात् मलिन भोगेच्छा को छोड़ ईश्वर की भक्ति में लवलीन होना ही श्रेय है। यही सुमति है, इसका यही यौवन-काल है। स्वेच्छाचारी हो विषय लंपट बन, रात दिन इन्द्रियों के सुख में मस्त रहना ही प्रेय अर्थात् कुमति है। इसके बढ़ जाने से धर्म के कामों का त्याग, नास्तिकता, ईश्वर तथा परलोक नहीं है। इसपर दृढ़ हो, संसार के मोह जाल में फंस, प्रभु से बाग़ी रहना ही विषयवासना-रूप कुमति का यौवन-काल है। सुमति देवी का उस के परिवारसहित आश्रय लेने से हमें वह परमपिता के पास पहुँचा देती है। कुमति के अधीन होने से वह हमें पाप-पथ की ओर ले जाती है। विषयवासना रूप कुमति-पिशाचिनी वास्तव में यावत् दैवी गुणों का भक्षण करने वाली एक प्रबल राक्षसी है। यही, देवी का विशाल-रूप धारण कर हर एक नर-नारी के मन को अपनी ओर खींच एक दूसरे ही रास्ते पर ले जाती है।

जिसके मार्ग पर जाने से मानव-जीवन का मधु-रस सारहीन हो, पशु-जीवन से भी नीचे नर-नारी का जीवन गिर जाता है।

एक लहलहाते हरे भरे सुन्दर वृक्षों से सुशोभित मनोहर वाटिका में मोहन नामक नौजवान एक दिन अपने मित्रों के साथ किलोलें करता मस्त घूम रहा था। उसी समय ये दोनों सुमति और कुमति-देवियों का सुन्दर आकार धारण किये वहाँ अपने-अपने परिवार के साथ आ उपस्थित हुई। सुमति देवी का सत्य पिता, क्षमा माता, वैराग्य विवेक, विनय भ्राता, सन्तोष चाचा, पवित्र प्रेम और धैर्य नाती, शांति, नम्रता, पवित्रता, कोमलता, उदारता, मृदुता सहनशीलता, प्रसन्नता आदि कन्यायें, मधुर गिरा सहेली, प्रभुभक्ति भगिनी; विश्वास, श्रवण, मनन, सेवक, दया दासी, परोपकार मित्र, निरहंकार दादा, सुकृत परदादा थे, ज्ञान इसका पति था। दूसरी कुमति देवी का आलस्य पिता, विषय-तृष्णा माता, अहंकार दादा, ममता दादी, झूठचन्द भाई, रोग, शोक, परा-ताप, क्रोध, लोभ, मद, मिथ्या, अभिमानादि ये इसके चाचा, ताऊ थे। इसकी कामना परदादी और इन सब का परदादा, स्वार्थ था। निन्दा, नशेबाज़ी,

डाह, चिन्ता, कठोरता, मूर्खता, चञ्चलता, धूर्तता, परहानि, नास्तिकता, बेचैनी और चुगली ये इस की कन्यायें थीं। कुसंग, वैर, विरोध, कलह, भ्रम, विश्वासघात, संशय, फूट, पाखँड, कपट, छल, व्यर्थ बकवाद और दम्भ—ये दश इस के पुत्र थे। परद्रोह, फ़िजूल खर्ची, प्रमाद, धनमद, व्यर्थ घमंडादि पांच नातियों को तथा अज्ञान पति को साथ लिये देवी का रूप बन ठन कर यह कुमति राक्षसी भी वहीं आ उपस्थित हुई। पहली सुमति देवी ने उस नौजवान का हाथ पकड़ बड़े प्रेम और आदर के साथ कहा— "हे प्यारे पुत्र मोहन! यदि मुझसे तुम प्रेम करोगे— मेरा उपदेश सुनोगे—तो तुम बुरे रास्ते पर भटकने से बच जाओगे। अन्त को तुम्हारी पहुँच उस परम-पवित्र धाम में होगी, जहां जाकर तुम अजर अमर हो जाओगे। यह भी मैं तुम्हें चिताये देती हूँ कि यह वासना-कुमति हर तरह के प्रलोभन चमक-दमक 'विष रस भरा कनक घट' की भान्ति दिखा कर तुझे उल्टे रास्ते पर लेजाकर संसार के जाल-जंजाल में डाल अन्त में धीरे धीरे खोलते हुए तेल के कड़ाह में जा गेरेगी, जहां तुम जल बिन मीन की तरह दिन रात तड़पते रहोगे।
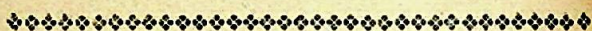
ऐ प्यारे जवान बेटा ! मेरी शरण लोगे— मेरा कहा मानोगे—तो मैं तुम्हें धर्म, आत्मप्रसाद, साधुभाव, ईश्वर पर श्रद्धा, प्रेम, परोपकार, स्वाधीनता, विनयभाव, सरल कोमलभाव, शम, दम, तितिक्षा, दया, क्षमा, सत्य और सन्तोष आदि अपने परिवार सहित मैं तुम्हारी सेवा टहल और हरदम रक्षा करूँगी । ऐ प्यारे ! अब सच कहो कि दोनों में किस को अच्छी समझते हो। यदि पूज्य पिता परमदेव परमेश्वर के दर्शनों को, तुम्हारे आत्मा में प्यास सता रही हो तो मेरे रास्ते पर चलो ! मैं तुम्हारे हज़ारों मलिन भावों को तथा पाप-संकल्पों को काट मंगलमूर्त्ति पिता जी की अनन्त सुखमयी गोद में बैठा दूँगी। वहां तुम्हें धर्म महामणि का लाभ होगा ! परम शान्ति पाओगे! प्रसन्न मुसकराते चेहरे का दर्शन करोगे और परम पिता जी तुमसे संतुष्ट हो तुम्हें परमानन्द का पात्र बना देंगे। तुम निश्चय जानो कि मेरा ही मार्ग जीव-मात्र को सुख का देने वाला, यही देवताओं, ऋषि-मुनियों और महात्माओं का सीधा सरल पंथ है। इस लिये तुम्हें चाहिये, मेरे उपदेश को जी में जगह दो। इस कुमति से कहो कि यहां से चली जा और यदि न जाय तो इस का

गुप्त ज़हर भरा उपदेश मत सुनो। यदि सुनो भी तो उसे धारण मत करना!

"प्यारे पुत्र! मैं कहाँ तक गिनाऊँ? इसके मोहजाल में पड़ हज़ारों मुसाफ़िर अपना अमूल्य चिन्तामणि जीवन, धन, दौलत लुटा के अन्त को सिर धुन धुन पछताते रहे। तुम्हें देख मुझे बड़ी दया आती है, तुम्हारी नई जवानी पर मुझे तरस आता है और तुम्हारी हालत देख मेरा जी दया से पिघल गया। बिजली सी चंचल इस जवानी से चौकस रहना और तुम्हें उचित है कि होशियारी के साथ पांव उठाना। इस समय तुम्हारे ज्ञान-चक्षु तेज़ हैं, तुम्हारा शरीर और मन उत्साह से पूर्ण हो रहा है। देखो सावधान! ऐसा न हो कि उस कुमति के प्रेम-कुएं में जा पड़ो, जिसका मुँह ऊपर से तृष्णा की अनेक बेलों और कुसँग-दुर्व्यसन (बुरी आदतें) रूपी घास के हरे तिनकों से ढका हुआ है। इस में जो प्राणी गिर जाते हैं, उन्हें जो कष्ट होता है, उनको वह ही जानता है। फिर वहाँ से निकलने का उपाय व यत्न तुम्हें कोई भी दिखाई न देगा और वहाँ तुम्हारा सहायक भी कोई न होगा।

भजन

"हाथ मल मल कर पछताना होगा। विपत्ति का सिर पर पहाड़ उठाना होगा॥ तुम्हें कुल को दाग लगाना होगा। अन्त को नरक में जाना होगा॥ धन, धर्म को गवाना होगा। उस समय मेरे उपदेश का गीत गाना होगा॥

"हे अमृत के पुत्र! मेरा उपदेश सुनो और धारण करो। मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि तुम्हें ज्योतिर्मय ब्रह्मधाम में लेजाकर खड़ा कर दूँगी। यही मेरा उपदेश है। यही मेरी इच्छा है। यही मेरा लक्ष्य है।" इसके वाद ये दोनों देवियाँ परिवार सहित युवा पुरुष के हृदय-रणक्षेत्र में घोर युद्ध करने लगीं। एक दूसरे को जीतने की इच्छा से रातों दिन संग्राम होता रहा। कभी सुमति की जीत होती थी, कभी कुमति की जय होती थी। इनकी लड़ाई वह युवक मोहन देर तक देखता रहा। एक ओर कुमति परिवार-सहित युवा पुरुष के दोनों पैर पकड़ वलपूर्वक संसार-समुद्र में फेंकना चाहती है। दूसरी सुमति देवी प्रेम-पूर्वक हाथ पकड़ अमृत-धाम की ओर लेजाना चाहती है। इतने में वह युवा पुरुष वोला—"हे सुमति देवी

ज़रा तुम चुप रहो और इस कुमति को भी कुछ कहने दो। देखो, यह भी क्या क्या अपनी रामकहानी सुनाती है!" भीतर विषपूर्ण, ऊपर से अमृत की झलक दिखाती, श्रुतियों का प्रमाण देती हुई कुमति बोली—

शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व
बहून् पशून् हस्तिहिरण्यमश्वान्।

ऐ नौजवान! तेरी तरुणावस्था है। यह तेरे खेलने खाने के दिन हैं। इस समय बूढ़ों की तरह चल कर अपनी नौजवानी को मत खोना। तुझे अभी संसार के सुख भोगना और दुनिया की लज़्ज़तों का स्वाद चखना है। तेरे सारे सुखों का सामान मेरे पास मौजूद है। यह सुमति जो देवी बनी हुई तुझे उपदेश दे रही है, यह निपट कंगाल और कौड़ी कौड़ी को मुहताज है। इसके पास एक भी ऐश का सामान नहीं है। फिर यह कहो कि तुझे क्या देगी। थोथी बातें ही भले सुना करो—'यह जग मीठा है। आगे किसने डीठा है'—इसकी सूरत तो देखो, विधवा के समान चमक झमक से खाली सफेद कपड़े पहने हैं। ज़रा मेरी ओर तो नज़र करो, रत्न और जड़ाऊदार भूषणों

से भूषित ज़री के काम की मखमली पोशाक पहने मानों चाँद का एक टुकड़ा धरती पर टूट पड़ा हो। दुनिया की सब न्यामतें मेरे पास तैयार हैं। ऐसा कौनसा पदार्थ है, जो मेरे हाथ में न हो ? जो जो ऐश आराम चाहिए, सब लो। अनेक सुगंधित द्रव्य, इतर और गुलाब केवड़े आदि तुम्हें ठंढक देने को हैं। स्वर्ण-खचित, रत्न-जटित, सुधालेप धवलित, ऊंचे ऊंचे महल दोमहले चौमहले रहने को हैं। जहां रात दिन गाना, बजाना, नाचना, हँसना, खाना, पीना, सोना, खेलना, कूदना, जारी रहेगा। लाल रङ्ग की उम्मदा से उम्मदा शराब तथा अन्यान्य और और खाद्य पेय चोष्य—खाने योग्य, पीने योग्य, चूसने योग्य यावत् संसार के पदार्थ मेरे पास तैयार हैं। तुम्हारी समस्त इन्द्रियों को सुख देने वाले चित्त को प्रफुल्लित तथा लुभाने वाली सब न्यामतें मैं दे सकती हूँ।

ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके
सर्वान् कामाछश्छन्दतः प्रार्थयस्व।
इमा रामाः सरथाः सतुर्या
नहीदृशा लम्भनीया मनुष्यैः ॥

इस लोक में जो जो कामनायें छोटे भाग्यवाले मनुष्यों को दुर्लभ हैं, उन सब कामनाओं को जैसी तेरी इच्छा हो, सो मुझसे मांग। सवारी, शिकारी, विमान, यान, गाने बजाने वाली यौवन के मद में चूर हुई स्त्रियां, स्वर्ग की अप्सरा और देवाङ्गनाओं के समान सौन्दर्यशालिनी, रूपगर्विता अनेक वारांगनायें वेश्यायें) मेरी कृपा से तुम्हारी सेवा करेंगी।

भूमेर्महदायतनं वृणीष्व।
स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि॥

चक्रवर्ती राज को और जितने वर्ष तुम जीने की इच्छा करते हो वह भी, और चिरजीवन का आदि तुम्हें दे सकती हूँ। मेरी कृपा से खुशामद ते हुए लोग तुम्हारे पैरों पर लोटेंगे। राजा-राज हो, सिंहासन पर विराजमान होगे। बड़े बड़े वीरों में, राजा महाराजाओं में तुम्हारा नाम द्ध होगा। यदि तुम मुझ से प्रेम करोगे तो के सिरताज बनोगे! इत्यादि अनेक लालच भमयी हाव भाव भरी अटक सटक मटक रूप ी मीठी बातें उसकी सुन वह युवक मोहन शान्त

अचलचित्त रह कर बोला,—"हे देवी ! तुम्हारी इन बातों से मेरे मन में शान्ति ने ज़रा भी कहीं पर स्थान नहीं पाया। जिन पदार्थों का लालच तुमने मुझे दिखाया, जिन प्रलोभनों में, जिन सुख-भोगों में तुम मुझे फंसाना चाहती हो उनमें पड़ थोड़े ही दिनों के बाद 'सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः' मेरी समस्त शक्तियां जीर्ण हो जांयगी और सब इन्द्रियों का बल, तेज, पराक्रम चला जायगा।

आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं
याति क्षयं यौवनम्।
प्रत्यायान्ति गताः न चापि दिवसाः
कालो जगद् भक्षकः॥
लक्ष्मीस्तोयतरंगभंगचपला
विद्युच्चलं जीवनम्।

जैसे घट में से धीरे धीरे सब पानी निकल जाता है। वैसे ही तेरी उम्र धीरे धीरे चली जा रही है।

प्रति दिन मेरी जवानी क्षय (नाश) होती जाती है। 'आदमी बुलबुला है पानी का, भरोसा क्या है ज़िन्दगानी का।—मेरे जीवन के जो दिन चले जारहे हैं, फिर लौट कर नहीं आवेंगे। काल (मौत) रात दिन सब को खा रहा है। लक्ष्मी जल के बुलबुले के समान है। मेरा जीवन इस संसार में बिजली की चमक की तरह है। मौत से मुझे कोई भी बचाने वाला दिखाई नहीं देता।

न मन्त्रं न तपो दानं न मित्राणि न बान्धवाः।
शक्नुवन्ति परित्रांतुं नरं कालेन पीडितम् ॥

न कोई विचार, न तप, न जप, न दान, न मित्र, न कोई बन्धु प्यारा, न परिवार के जन, काल से परिपीड़ित नर की रक्षा करने को कोई भी समर्थ नहीं है। बड़े २ बलियों को काल ने खा लिया तो मेरी क्या हक़ीक़त है !

मातुलो यस्य गोविन्दः पिता यस्य धनञ्जयः।
सोऽपिकालवशं प्राप्तः कालोहि दुरतिक्रमः॥

जिस अभिमन्यु का श्रीकृष्ण तो मामा था और महारथी शूरवीर धनुर्धारी अर्जुन पिता था, सो वह राजकुमार अभिमन्यु भी काल के वश हो गया। काल बड़ा ही बलवान् है। 'आयुषःखण्डमादाय रविरस्तं गमिष्यति' आज सूर्य जो उदय हुआ है सो मेरी बाक़ी उमर का एक हिस्सा तोड़ कर जल्दी अस्त हो जायगा अर्थात् मेरे जीवन के मोती का एक टुकड़ा तोड़ कर भाग जायगा।

महाबलान् पश्य महाऽनुभावान्
प्रशास्य भूमिं धनधान्यपूर्णाम्।
राज्यानि हित्वा विपुलांश्च भोगान्
गता नरेन्द्रा वशमन्तकस्य॥

ऐ देवी! तू देख, महा बड़े बड़े बलवान् महानुभाव बड़े दीर्घदर्शी महा पुरुष भूमण्डल के राजा महाराजा, बड़े बड़े सम्राट् नरेन्द्र धनधान्य-पूर्ण पृथिवी का शासन कर अपने राज तथा भोगों को छोड़ कर मौत के मुख में चले गए। तेरे दिए हुए सामानों ने उन की कुछ भी रक्षा न की।

चेतोहरा युवतयः स्वजनोऽनुकूलः ।
सद् बान्धवाः प्रणतिगर्भगिरश्च भृत्याः॥
गर्जन्ति दन्तिनिवहास्तरलास्तुरंगाः ।
सम्मीलने नयनयोर्नहि किञ्चिदस्ति ॥

चित्त के हरनेवाली स्त्रियां अनुकूल, स्वजन, अच्छे नातेदार और नम्रतापूर्वक गम्भीर अर्थ सहित वचन बोलने वाले नौकर चाकर, दन्तावल हाथियों की क़तार और सरपट जाने वालें घोड़े हिनहिना रहे हैं इत्यादि सब सामान, हे देवी ! तेरे दिये हुये मेरे पास मौजूद हैं, पर आंखों के मुंद जाने पर कुछ भी काम न आयगा। ऐ देवी ! जो तुम ने मुझे चिरजीवन का लालच दिया है।

नलिनीदलगतजलमतितरलम् ।
तदवज्जीवितमतिशयचपलम् ॥

जैसे कमल फूल की एक पँखुड़ी पर जल का एक बून्द पल भर भी नहीं ठहरता, वैसे ही मेरा जीवन अस्थिर और चंचल है।

क्षणादुत्पद्यन्ते विलयमपि यान्ति क्षणममी।
न केऽपि स्थातारःसुरगिरिपयोधिप्रभृतयः॥

जिन सामानों को तू मुझे देना चाहती है वह क्षण में पैदा होते हैं और क्षण ही भर में नाश हो जाते हैं। यहाँ असुर सुर पहाड़ ताल नदी समुद्र तेरे दिये जितने पदार्थ हैं, मुझे स्थिर रहते कोई भी दिखाई नहीं देता।

अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वापि विषयाः
वियोगे को भेदस्त्यजति न जनो यत्स्वयममून्।
व्रजन्तः स्वातन्त्र्यादतुलपरितापाय मनसः
स्वयं त्यक्ता ह्येते शमसुखमनन्तं विदधति।

ऐ देवी! बहुत काल पर्यन्त यह विषय भोग मेरे पास रहे तो भी इन की जुदाई अति दुखदाई एकनाएक दिन मुझ से ज़रूर होगी। इस लिये इन को मैं पहले ही क्यों न छोड़ दूँ। यदि यह स्वयं चले जायँगे तो मेरे मन को अनेक ताप देकर जायँगे।

और यदि मैं ही पहले इन को छोड़ दूँ तो मुझे सब सुख और महा-शान्ति मिलेगी !

पुरंदरसहस्राणि चक्रवर्त्ति शतानि च ।
निर्वापितानि कालेन प्रदीपा इव वायुना ॥

हज़ारों इन्द्र, सैकड़ों चक्रवर्त्ती राजों को, जैसे दीये को हवा शान्त कर देती है; वैसे ही इस काल ने खाक में मिला दिया, तो मेरी क्या गिनती है ?

कोट्यो ब्रह्मणा याताः गताः सर्गपरंपराः ।
प्रयाताः पांसुवद्भूपाः का धृतिर्मम जीवने॥

ब्रह्मा की सृष्टि-रचना की करोड़ों परम्परा, जो एक के बाद दूसरी होती गई, वे एक भी न रहीं; सब चली गईं । जैसे धूल का कण उड़ता है, वैसे ही राजा लोग भी यहां से उड़ गये, तो मेरे जीने का क्या ठिकाना है ?

स्वरूपं शरीरं नवीनं कलत्रं धनं मेरुतुल्यं वचश्चारु चित्रम् । हरेरङ्घ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥

जिस नर-नारी का मन परम पिता के चरण-कमलों में प्रेमयुक्त नहीं हुआ तो कुछ नहीं, तो कुछ नहीं, तो कुछ नहीं, उसे धिक् है । चाहे जवान शरीर अति सुन्दर हो, उस के घर में धन पहाड़ के समान हो, और बोली भी उस की मीठी बड़ी प्यारी विचित्र हो, तो भी हरि-भक्ति बिना उस का जीवन व्यर्थ (फ़िजूल) है ।

जीवन्तं मृतवन्मन्ये देहिनं भक्ति-वर्जितम् । मृतोऽपि भक्तिसंयुक्तो दीर्घजीवी न संशयः ॥

मैं उन नर-नारियों को जीता ही मरा मानता हूँ जो कि प्रभु-भक्ति-विहीन हैं । परन्तु जो भक्ति करते, करते मृत्यु को प्राप्त हो गये हैं, उन का ही सच्ची और अनन्त जीवन है ।

ऐ देवी ! तुमने मुझे सुन्दर स्त्रियों तथा वेश्याओं का लालच दिया है, इसका भी ज़रा जवाब सुन लो।

नेषु जीवितव्येषु स्त्रीषु भोजनवृत्तिषु ।
तृप्ता मानवाःसर्वे याता यास्यन्ति यांतिच

धन, जीवन, भोजन, और स्त्री, सुखादि में न नर-नारी अतृप्त हो कर गए और जा रहे हैं। र जायंगे और इस वक्त जो वर्तमान हैं, वह भी शांत और अतृप्त हैं। अर्थात् उनको भी तृष्णा-अग्नि ला रही है।

ृथिव्यां ब्रीहियवं हिरण्यं पशवः स्त्रियः ।
लमेकस्य तत्सर्वमिति पश्यन्न मुह्यति ॥

इस पृथ्वी में जो कुछ अन्न है, स्वर्णादि धातु, ती, बाग, बगीचे, कोठी, बङ्गले, वस्त्र, भूषण, घोड़े, की स्त्रियां, सो एक मनुष्य को भी तृप्ति नहीं कर तीं। ऐसा जो देखता-विचारता है, वह तेरे जाल कभी नहीं फंसेगा।

कल्पं स्थितं तनुभृतां तनुभिस्ततः किम् ।

इस शरीर से यदि हम कल्प पर्यन्त अनेक युग जीवें तो भी इस से क्या है ? अनन्त जीवन भी ईश्वर-भक्ति के विना व्यर्थ है !

यदा मेरुःश्रीमान्निपतति युगान्ताग्निनिहतः
समुद्राःशुष्यन्ति प्रचुरनिकरग्राहनिलयाः ।
धरा गच्छत्यन्तं धरणिधरपादैरपि धृता ।
शरीरे का वार्ता करिकलभकर्णाग्रचपले ॥

एक दिन सुमेरु पहाड़ भी चूर्ण (टुकड़े २) हो जायगा ! बड़े बड़े मगरमच्छों का निवासस्थान महान् जलनिधि समुद्र भी सूख जायगा । पर्वतों से दबी हुई यह पृथ्वी भी नाश हो जायगी । तब हाथी के बच्चे के कान के अग्र-भाग के समान चञ्चल जीवन की तथा शरीर की क्या गिनती है ।

आयुर्वर्षशतं नृणां परि-
मितं रात्रौ तदर्धं गतम् ।
तस्यार्द्धस्य परस्य चार्द्ध-
मपरं बालत्ववृद्धत्वयोः ॥
शेषं व्याधिवियोगदुःख-
सहितं सेवादिभिर्नीयते ।
जीवे वारि तरंगचञ्चलतरे
सौख्यं कुतः प्राणिनाम् ॥

पहले तो मनुष्य की उम्र ही सौ वर्ष की है । पचास वर्ष तो सोने में रात्रि में बीत जाते हैं । फिर पचास के तीन भाग करो इस में पहला भाग तो बालकपन में, दूसरा वृद्धावस्था में चला जाता है, जो बाकी भाग बचा सो बीमारी, वियोग, दुःख पराई सेवा, वैर, विरोध, लड़ाई, टएटा, चिन्ता, शोक, हानि लाभादि अनेक क्लेशों में फ़िजूल गुज़र जाता है । यदि सौ वर्ष तक जीवन हो तो भी हिसाब

लगाने से सुख के दिन कुछ थोड़े ही निकलते हैं। यह जल-तरङ्ग के समान जीवन है। सो इसमें प्रभु-भक्ति प्रभु-प्रेम बिना प्राणी को सुख कहां है।

"व्याघ्रीव मृत्युस्तिष्ठति"

वाघिनी के समान मौत मेरे पास गुप्त बैठी हुई अवसर पाय मेरे जीवन को हर लेगी। अय देवी, तव तुम्हारे दिये ऐश के सामान सब यहां ही धरे रह जांयगे। तुम्हारे दिये हुए यह सामान कुछ काम न कर सकेंगे। उन की वियोग-अग्नि से मेरा हृदय अलबत्ता सदा जलता रहेगा। रोग, शोक, पाप, ताप, तथा अनेक तरह के दुःख सब उस समय एक साथ मेरे ऊपर आ टूटेंगे—सच कहा गया है:—

रोगशोकपरितापबन्धनव्यसनानि च।
आत्मापराधवृक्षस्य फलान्येतानि देहिनाम्॥

तेरे दिये विषय सुखों में आसक्त हो फंसकर मेरा आत्मा प्रभु-विमुख होकर अनेक अपराधों में

पड़ जायगा । उस अपराध वृक्ष के रोग, शोक, पाप, ताप और दुर्व्यसनादि फल हैं, इनसे मेरा आत्मा बलहीन हो जायगा, तब परम पिता की भक्ति—उस पर विश्वास प्रभु-सेवा परोपकार कुछ भी मुझ से न बन पड़ेगा । हे देवी ! अपने हाथी घोड़े राग रंग राज पाट तुम अपने लिए या अपने सेवकों के लिए रक्खो और जो तुम्हारे जाल में आ फँसे उनके लिए इन सब पदार्थों को रख छोड़ो । अय देवी ! जिनकी ऐसी बुद्धि है, वे ही तुम्हारे सेवक हो सकते हैं ।

बद्धस्था ये शरीरेषु बद्धस्था जगतिस्थितौ ।
तान्मोहमदिरोन्मत्तान् धिग्धिगस्तु पुनःपुनः॥

मोहरूप मदिरा पान कर जो उन्मत्त (पागल हो) शरीरों में और इस जंगल जगत् के सदा क़ायम रहने का दृढ़ विश्वास करें अर्थात् संसार सत्य है, ऐसा जान इसमें फँसे हुए ऐसे तेरे सेवकों को बार-बार धिक्कार है । अब मैं तेरे को क्या कहूँ, बस उन्हीं को यह तेरे सारे सामान सुखदाई हों ।

हे कुमति ! तूने जो मुझे धन दौलत का लालच दिखाया है सो—

"न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः"

धन से कोई भी नर नारी तृप्त नहीं होता।

पृथिवीन्धनपूर्णां चेदिमां सागरमेखलाम्।
प्राप्तोपि पुनरप्येष स्वर्गमिच्छन्ति नित्यशः॥

समुद्रान्त पृथिवी का राज्य मिल जाय तो भी उस पर अरुचि दिखलाना यह मनुष्य सदा स्वर्ग की कामना करता है।

द्रव्येण जायते कामः क्रोधो द्रव्येण जायते।
द्रव्येण जायते लोभो मोहो द्रव्येण जायते॥

ऐ देवी! तेरे दिये धन से काम क्रोध लोभ और मोहादि अनेक दोष पैदा होते हैं।

"अमृतत्वस्य मोक्षस्य वित्तेनाशानचास्ति च"

ऐ कुमति! तेरे दिये धन से हमें अमृत स्वरूप मोक्ष की कभी भी आशा नहीं कि हमें मिल जायगी। ऐ कुमति! तुमने मुझे वाराङ्गना (वेश्या) भी देने को कहा था। ऐसी बेहूदी बातों से तुझे नेक भी लाज न आई।

वेश्याऽसौ मदनज्वाला रूपेन्धनसमेधिता ।
कामिभिर्यत्र हूयंते यौवनानि धनानिच ॥

वेश्या एक जलती हुई ज्वाला (अग्निकुंड) है। सुन्दर स्वरूप जिसका ईन्धन है। उसमें कामी मनुष्य धन, धर्म, यौवन, आरोग्यता, आयु, सुयश, तेजबल और भजन पूजा और दान पुण्य उस ज्वाला में हवन मोह-वश हो कर देते हैं।

एता हसन्ति च रुदन्ति च वित्तहेतो-
र्विश्वासयन्ति पुरुषन्न च विश्वसन्ति ।
तस्मान्नरेण कुलशीलसमन्वितेन
वेश्याः श्मशानघटिका इव वर्जनीयाः ॥

वेश्या पल में हंसती, पल में रुदन करती है, धन के लिये पुरुष को अपने पर विश्वास दिलाती है। परन्तु पुरुष पर विश्वास नहीं करती। इस लिये जो धर्मात्मा कुलीन महात्मा हैं, वह मसान की घटी के समान वेश्याओं का ग्रहण नहीं करते।

तपोव्रतयशोविद्या कुलीनत्वं दमो यमाः
छिद्यन्ते वेश्यया सद्यः कुठारेण लता यथा

ज्ञान, ध्यान, विचार, तप, जप, ब्रह्मचर्यादि व्र
मान, प्रतिष्ठा, सुयश, विद्या, कुलीनता, यम, नि
और जीवन (उम्र) आदि ये जल्दी जैसे प
(कुहाड़ा) प्रफुल्लित सुन्दर लहलहाती बेल को
देता है, वैसे ही वेश्या तन, मन, धन, धर्म, व्रत, अ
आरोग्यता, सुयश, मान, जप; तप और व्रत-ब्रह्मचर्य
का खण्डन कर देती है । ऐ देवी ! ऐसी घृणित
वस्तुओं को आप अपने चरण-सेवकों के लिये सम
छोड़ो । जो प्रभुभक्ति-विहीन हैं, वही इसे ग्रहण
और वे ही तेरे प्यारे बन वेश्या को धन, धर्म, तन,
सुयश जीवन दे इसके बदले इस लोक नरक रोग
बदनामी पर मर कर नरक आदि लेंगे। ऐ देवी ! तु
मुझे लाल शराब का भी लालच दिखलाया है।

अयुक्तं बहु भाषन्ते यत्र कुत्रापि शेरते
नग्नाविक्षिप्यगात्राणि बालका इव मद्यपाः

अयोग्य वचन बकना, जिस मैली कुचैली जा
में गिरे वहीं पड़े रह गये, वस्त्र त्याग कर नग्न (न

जाना, पागल तथा वे समझ बालक के समान जाना, यही मदिरा का प्रताप है।

मत्तो हिनस्ति सर्वं मिथ्या
प्रलपति हि विकलया बुद्ध्या
मातरमपि कामयते
सावज्ञं मद्यपानमत्तः सन् ॥

नशेबाज़ सब को मारने की तय्यारी करता है। मिथ्या बोलता है, व्याकुल-बुद्धि से माता को भी समान के सहित काम के लिये चाहता है।

यत्पीत्वा गुरवेऽपि कुप्यति विना
हेतोस्तथा रोदिति
भ्रान्तिं याति करोति साहसमपि
व्याधेर्भवत्यास्यास्पदम् ॥
विवृणोतिलोकपुरतोऽप्युन्मत्तवच्चेष्टते
जापरिपन्थिमोहजननं मद्यं न पेयं बुधैः।

ऐ देवी ! जिसको पीकर नर-नारी गुरू के ऊपर भी क्रोध करते हैं। बिना कारण रोने लग जाते हैं। अनेक भ्रम में पड़ जाते, अपना तथा खानदानों का नाश कर देते हैं। वे बेचारे कर्म कर बैठते हैं। रोगों का स्थान बन जाते हैं। सब के सामने अपनी धोती खोल देते हैं। पागल के समान सब काम करते हैं। इस लिये उचित नहीं कि बुद्धिमान् लोग ऐसी लज्जा धर्म के हरने वाली और अज्ञान को पैदा करने वाली शराब का पान करें।

चित्ते भ्रान्तिर्जायते मद्यपानाद्
भ्रांते चित्ते पापचर्यामुपैति ।
पापं कृत्वा दुर्गतिं यान्ति मूढा-
स्तस्मान्मद्यं नैव पेयं न पेयम् ॥

शराब पीने से चित्त में भ्रान्ति होती है। चि[illegible] भ्रान्त हुआ तब पाप का काम करने लगता है। [illegible] पाप किया तब मूर्ख लोग दुर्गति भोगते हैं इस [illegible] तेरे कहने से मैं शराब कभी नहीं पीऊंगा ! [illegible] नहीं पीऊंगा !!

और न मैं किसी तरह संसार के प्रलोभनों में तेरे उपदेश से आ सकता हूँ । जिन पदार्थों का—जिन विषय सुखों का तुम नाम ले अपने जाल में फंसाती हो उन सब को मैं ने खूब देख भाल रक्खा है और उनके भोगने से मेरे हृदय को और भी अधिक तृष्णा-अग्नि जलाएगी ।

यथैव शृङ्गोःकाले वर्धमानस्य वर्धते ।
तथैव तृष्णा भोगेन वर्धमानेन वर्धते ॥

जैसे छोटी बछिया के सींग छोटे होते हैं और ज्यों ज्यों वह बड़ी होती जाती है वैसे ही उस के सींग भी बढ़ते जाते हैं तैसे ही ज्यों ज्यों मैं भोग भोगता गया त्यों त्यों ही मेरी तृष्णा-अग्नि बढ़ती गई और तृष्णा बढ़ती हुई क्या नहीं करती है ।

अपि मे रूपमं प्राज्ञमपिशूरमपिस्थिरम् ।
तृणी करोति तृष्णैका निमेषेण नरोत्तमम्॥

सुमेरु पर्वत के समान ऊंचे दर्जे का विद्वान् भी शूरवीर, अचल स्वभाव वाला भी क्यों न

हो, पुरुषों में उत्तम से उत्तम पुरुष भी हो, उसे भी तृष्णा तिनके के समान एक पल में हलका कर देती है। ऐ देवी! मैंने स्वयं अपनी आंख से देखा है।

बलिभिर्मुखमाक्रान्तं पलितैरंकितं शिरः।
गात्राणिशिथिलायन्ते तृष्णैका तरुणायते

जिन पुरुषों की वृद्धावस्था भी आ गई, मुंह पर सिकुड़न आई, सिर के बाल सब सुफेद होगए। गए और सब शरीर के अंग शिथिल (ढीले) होगए। पर मैंने एक तृष्णा उन की पहले से भी अधिक जवान ही देखी।

जीर्य्यते जीर्यतःकेशा दंता जीर्यन्तिजीर्य्यतः
जीर्य्यतचक्षुषी श्रोत्रे तृष्णैका तरुणायते॥

बुढ़ापे में सारे बाल सफ़ेद हो गये। सब दाँत गिर गये। आँख में देखने की ताक़त न रही। कान में सुनने की शक्ति न रही। पर मैंने विषय-सुखों के लिए एक तृष्णा पिशाची को जवान होते पाया। मैंने यह कहते हुए महान् पुरुषों के ये वचन सुने हैं।

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्तास्तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः। कालो न यातो वयमेव यातास्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः॥

मैंने जाना था कि मैं भोग भोग रहा हूँ, परन्तु मैंने तो भोग नहीं भोगे, और सुख भोग के समान तो स्त्री आदि अब भी ऐसे ही बने हुए हैं, उलटा हमारा ही विषयों ने भुगतान कर दिया। हमने जाना था कि हमीं तप कर रहे हैं, पर हमने तप तो न किया पर तप ने ही हमें तपा डाला। हमने जाना कि हम काल को व्यतीत कर रहे हैं, पर काल तो ऐसा ही रात दिन बना रहा, पर हम ही बीत गये और तृष्णा तो पुरानी न हुई, हम ही पुराने हो गये।

ऐ देवी ! तुमने कहा था कि तुम अभी नौजवान हो, तुम्हारा समय संसार के सुख भोगने का है, इसका भी उत्तर सुन लीजिए।

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते॥

कामनाओं के भोगने से तृष्णा कभी शान्त नहीं होती, जैसे अग्नि घृतादि डालने से और अधिक (ज्यादा) प्रज्वलित तेज होती जाती है। ऐ देवी! इन विषयों में मुझे तो कुछ भी सुख शान्ति नहीं मिली वरन इनकी जुदाई से वियोग अग्नि ने मुझे खूब जलाया और असह्य वेदना अलबत्ता झेलनी पड़ी। ऐ कुमति! तेरे दिये पदार्थों के स्वाद-मात्र से रोग, शोक, चिन्ता, पराधीनता, भय तथा बेचैनी ही मिली। आगे के लिए मैंने यह निश्चय कर लिया है कि विषय-सुख मेरे आत्मा को किसी भांति भी तृप्ति वा सच्ची शान्ति नहीं दे सकेंगे। इस लिए मैं तेरे दम में आने वाला नहीं हूँ। ऐ कुमति! तेरी क्या यह इच्छा है कि मैं जवानी में कुछ भी परोपकार, प्रभुभक्ति न करूं? क्या केवल पशु-जीवन में, खान पान में ही रात दिन हा—हा—हू—हू में रह कर इस सुन्दर सतेज चमकदार यौवन मोती को उसके बदले बेच डालूं?

युवैव धर्म्मशीलःस्यादनित्यं खलु जीवितम्
कोहिजानातिकस्याद्यमृत्युकालो भविष्यति

यह मनुष्य युवावस्था में ही उत्तम धर्मशील हो सकता है। जीवन का कुछ ठिकाना नहीं है, कौन जानता है, हम में से कल किसका कूच का नक़ारा बज जाय।

अस्थिरं जीवितं लोके ह्यस्थिरे धनयौवने।
अस्थिराः पुत्रदाराश्च भक्तिकीर्त्तिद्वयंस्थिरम्॥

इस लोक में प्रभु की भक्ति और कीर्त्ति (सुयश) इन दोनों के बिना जीवन, धन, यौवन, पुत्र, और स्त्री आदि कोई भी पदार्थ स्थिर नहीं है, और यौवन काल में ही प्रभुभक्ति हृदय में प्रवेश करती है। परमपिता की सेवा व भेंट दोनों की यही तो एक चीज़ है, जवान की ही तो कुरबानी व बलिदान होता है। बालक वा वृद्ध का बलिदान नहीं होता। यौवन काल में ही ईश्वर की ओर अनुराग जाता है। यौवन काल में ही हृदय प्रफुल्लित होता है। यौवन काल में इच्छा धर्म बल से बलवान् हो संसार के हज़ारों प्रभु की सेवा करने में जो विघ्न आते हैं, उनका सामना युवावस्था वाले ही कर सकते हैं। इसी समय में महान् पवित्र मंगल-भाव हृदय में प्रफुल्लित होते हैं। जिनकी सुगन्धि

चारों ओर फैलती है और सारे संसार का कल्या
और पवित्र करती है। हा शोक ! जो इस युवावस्था
विषयों की धार में वह गये और तेरी गुलामी की
के दलदल में फँस गये तो फिर थोड़े ही दिनों के
धीरे धीरे तेज, तप, बल, और उत्साह आदि सब
नष्ट हो जाँयगे। नौजवान पुरुषों के लिये संसार
सेवा के लिये प्राण भी देना कुछ कठिन नहीं मा
होता। यदि मैं धर्म बल और धर्म उत्साह के
आत्मा को बलवान् न करूंगा, और तेरी दी हुई
का व तेरे परिवार का दास हो केवल आहार,
पुत्र सुखादि में लगा रहूँगा तो मेरे आत्मा की
धीनता कुछ भी न रहेगी। फिर मुझे स्वप्न में भी शा
सुख मिलना कठिन होगा। जो स्वेच्छाचारी (
मुख़त्यार) होकर केवल विषय-अनुराग में ही
जवानी खराव करता है वह थोड़े ही दिनों बाद बुढ़
पहुँच कर उसका बल, शरीर और इन्द्रियों की
शक्तियाँ क्षीण हो जायँगी ! विषय तृष्णा महान्
हो तथा पाप-लालसा उसके आत्मा को जलायगी
हाय ! ऐसे समय बुड्ढे के हृदय में नरक (दोज़ख़
की आग क्या न जलाती होगी ? हा शोक ! उसे
स्वरूप धारण कर जगत् का उद्धारक बनना

कल्याता, पिता की और गुरू की नाईं हज़ारों नौजवानों
ावस्था मीठे मीठे सत्य उपदेशों द्वारा प्रभु के प्रेम, प्रभु
की की भक्ति रूप शीतल गङ्गा में स्नान कराना था। हज़ारों
के -नारियों को सुख शान्ति का मार्ग बताना था।
सब अफ़सोस सद अफ़सोस! उस के इस बुरे दृष्टान्त से
ार ात्माओं का भी मन विचलित, निरुत्साहित, चला-
मान, कमहिम्मत होता है। और जी में नफ़रत आती
के हाय, क्या यह स्वर्ग भोग है या नरक का भोग है।
ई इस अवस्था में वह परलोक चला गया और
र, ा अग्नि वैसे ही उस के हृदय में जलती रही तो
ी नरक की अग्नि की जलन को कौन बुझायगा?
शां, ऐसे समय उस पर कौन शांति-जल बरसायगा,
(केगा। हे परम पिता कृपा करो कि ऐसी पीड़ा,
अ कष्ट किसी महापापी से पापी को भी न भोगना
ुढ़। ऐ कुमति देवी! मैं तुम्हारे बताए हुये कुटिल पथ-
ी पर कभी भी चल नहीं सकता। यदि तुम्हारे पास
ऐसा अमूल्य रत्न सदृश पदार्थ हो कि जिसे पा
में सब का प्यारा बन जाऊं और संसार की सेवा
ज सकूं और कृतार्थ हो जाऊं तो मुझे दीजिए,
ादा के लिये तुम्हारा दास रहूँगा। ऐसे ऐसे
शाली वचन तथा सत्य उपदेश सुन कर और

परम पवित्र हृदय के भावों को जान कुमति देवी चुप-चाप हो गई और समझ गई कि यहां मेरी दाल न गलेगी। उस युवा पुरुष को वहां ही छोड़ चम्पत हुई। जिस समय कुमति ने उपदेश देना शुरू किया था, उसी समय सुमति देवी अपना अपमान समझ वहां से चली गई थी। अब इस समय जिज्ञासु युवा अकेला ही रह गया। अन्धियारी रात थी, अन्धकार सब ओर छाया हुआ था। यह नौजवान 'किंकर्त्तव्य विमूढ़' हो, कहां जाऊं,क्या करूं,किस का आश्रय पाऊं इत्यादि सङ्कल्प विकल्प करने लगा और घबरा गया और उस समय उसे कुछ भी न सूझता था कि वह अब क्या करे। सांसारिक विषयों को तो सारहीन दुःखरूप समझ उन से तो उस ने अपना दिल हटा लिया था*परन्तु हृदय-मन्दिर में ईश्वर-प्रेम, ईश्वर-भक्ति का अभाव था। ऐसी दशा में मन को किस ओर लगावे,किसे अपना लक्ष्य ठहरावे, उसे कुछ मालूम न था। संसार की विषय-वासना इसे भयानक और मसान के समान प्रतीत होती है। इस दशा में न तो

* ऐसी हालत अकसर बहुत हरि-भक्तों और जिज्ञासु जनों पर आया करती है।

उन्हें संसार के सुखों का स्वाद ही मिलता था। न ईश्वर के प्रेम को उसके चित्त में ठहरने को जगह ही मिलती थी। ईश्वर का दर्शन कैसे हो इसका पता नहीं मिलता। इस शोक-अग्नि से इनका चित्त और शरीर व्याकुल (बेचैन) हो रहा था। इस समय युवा, प्यासे मृग की नाईं भटकता फिरता था और व्याकुल था। इस अभाव (कमी) को दूर करने के लिए और चिन्ता तथा बेचैनी को दूर करने का उपाय सोच रहा था। पर किसी से भी शान्ति का उपाय न मिला। इस दशा में पड़कर साधु युवा रोते रोते और विलाप करते असहाय हो अपने जीवन के सहाय को ढूँढ़ रहे थे। अनाथ बच्चे की नाईं दीन वचनों से उस सुमति देवी को याद कर कर पुकारते थे। देवी तेरे बोल कैसे मीठे और अमृत रस के सने हुए थे कि जिनके सुनने से मेरे हृदय में कुछ ठंडक पड़ी थी। अब तुम कहां हो, अब मेरे पास क्यों नहीं आतीं। आओ, अब मुझे अपना दर्शन दो। मैं तुम से ही प्रेम करूंगा और तुम्हारे बताए मार्ग पर चलूंगा। ऐ देवी, तेरा ही उपदेश संसार-सागर से पार उतारने के लिए जहाज़ है। जब युवा ऐसे ऐसे शब्दों से याद कर रहा था तब उसी समय उसी निर्जन बाग़ में क्या देखता है कि

दूध के समान उज्ज्वल वस्त्र धारण किए मँगल मूर्ति, मुसकराती हुई प्रसन्न-वदना सुमति देवी शान्ति की मूर्ति अचानक आन प्रकट हुई। उस युवा को व्याकुल तथा बीमारी की दशा में देख, बड़ी प्रीति तथा हमदर्दी से उसका हाथ पकड़ धैर्य और तसल्ली देते हुए बड़े प्यार मधुर स्वर से एक नीचे लिखा गीत गा सुनाया।

❁ भजन ❁

क्यों बागी हुआ तू फिरे, भरोसा क्या ज़िन्दगानी का ॥ टेक ॥ ऐसा मोह जाल में फँसा मुरीद हो गया कुमति रानी का ॥ १ ॥ कोई दम का मेहमान शिकार हुआ नादानी का ॥ २ ॥ सम्हल जा देख अब भी शरण में आ खयाल कर इस जवानी का ॥ ३ ॥ सब धन्धा उनपर छोड़ दीनो हो बानी मुबानी का ॥ ४ ॥ तेरी रच्छा करी हमेशा शुकर कर महरबानी का ॥ ५ ॥ कर दिल से उनको प्यार प्यारा होजा लासानी का ॥६॥

पर उस समय मनमोहन युवा कुछ बीमारी की हालत में हो गए थे। ऐसी हालत को देख कर सुमति देवी कहती है, ऐ बेटा! तुम शोक-सागर में डूब कर क्यों इस बीमारी की दशा में गोते खा रहे हो। ऐ प्यारे मनमोहन! तुम क्या चाहते हो, तुम अपने हृदय

के भावों को प्रकट क्यों नहीं करते। तुम्हारी जो मंगलेच्छा हों उनको वह दयालु तुम्हारा परम पिता जी बड़ी प्रसन्नता के साथ पूर्ण करेंगे। बेटा, तेरे पिता के अनन्त शक्तियों के अनन्त भण्डार भरे हैं। निस्संदेह वे सब तेरे लिए हैं। उनकी दया का, उनके प्रेम का, कोई अन्त नहीं पा सकता। फिर क्यों शान्तिहीन, बेचैन हो इस निर्जन वन में दिल को भटकाते फिरते हो? मेरा हाथ पकड़ो, मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें उस मंगल-मूर्ति का दर्शन कराऊंगी!

❀ भजन ❀

उस प्रभु जी के नगर में आनन्द की बहार है—टेक आनन्द की घड़ी पल, आनन्द के राद दिन। आनन्द ही आनन्द के सब व्यवहार हैं॥ १॥ आनन्द की बहार है। सुख ही सुख आनन्द ही आनन्द-आनन्द आनन्द आनन्द है। सब तिथि मिति नक्षत्र पल त्योहार है॥ २॥ आनन्द की बहार है॥

जिन के अमृत रूप प्रेमानन्द रस से सिंचित समस्त ब्रह्माण्ड जीवन रूप से आनन्द हरा भरा हो रहा है। जो इस चर अचर स्थावर जंगम का एकमात्र स्वामी और नियन्ता अर्थात् जगभूले आप

झुलावे, जो सब आधारों का आधार है, उसका प्रेम जब तुम्हारे चित्त में स्थान पा लेगा और हृदय-मन्दिर में उसका "तं देवतानां परमं च दैवतं" देवताओं के परम देवता के दर्शन पाओगे तब यह तुम्हारा शोकाश्रु प्रेमाश्रुओं में बदल जायगा।

❁ भजन ❁

उस दयालु देव के दर्बार में क्यों न चलो।
वो चाहे सदा तुम को उन बिन दुःखों में क्यों जलो।
वहां खुशी रहो सदा तुम मोहन फूलो और फलो।
नीके दिन खोये बहुतेरे देर लगाई क्यों अबलो।

ऐ प्यारे मोहन! इस लिए मेरा हाथ पकड़ लो चलो, मैं तुम्हें उस अजर अमर की गोद में बैठा दूं कि तब तुम भी अजर अमर हो जाओगे। ऐ मोहन! उसकी शरण लिये बिना तुम्हारा निर्वाह नहीं हो सकेगा।

❁ भजन ❁

प्रभु बिन कैसे गुजारा होगा—टेक। बड़े भाग मानस तन पाओ मौक़ा न ऐसा दुबारा होगा॥ १ ग़ौर करो सोचो तो प्यारे उस बिन कौन सहारा होगा॥ २॥ अन्त समय दुःख पाओ मोहन उस बि

नहीं कोई तुम्हारा होगा ॥ ३ ॥ मेल करो उन से सुख पाओ वही हरदम परम प्यारा होगा ॥ ४ ॥

सुमति देवी की इस परम प्यारी हितकारी कोमल मधुर वचनों ने चिन्ता-आतुर, रोग-पीड़ित, शोक-व्याकुल, संतप्त-युवा के चित्त में ऐसी ठण्डक दी जो मानो मनो बर्फ़ में ढके रहने पर भी बहुत कठिन थी। उस वक्त प्यारे मोहन युवा का जी पिघल उठा। उसी व्याकुल तथा रुग्ण दशा (बीमारी की हालत) में बड़ा प्रसन्न हो उस देवी से पूछने लगा, हे देवी! तुम कौन हो, कहां से आई हो? अब कहाँ जाओगी। किस दयासागर ने तुम्हें यहाँ भेजा है और किस को खोजती फिरती हो। मालूम होता है कि तुम किसी महाराजाधिराज की प्रेरणा से यहाँ आई हो। तुम तो धर्म-सुख-शान्ति की प्रत्यक्ष मूर्त्ति मालूम होती हो। मेरा आत्मा यह गवाही देता है कि तुम को भेजने वाला वह अपार अथाह, करुणा और प्रेम का सागर है। इस मेरी दशा पर तरस खा उस ने तुम्हें भेजा होगा। 'धन्य धन्य भाग हमारे। देवी दर्शन हुए तुम्हारे' ऐ देवी कृपा कर मुझे यह बताओ कि कहाँ जाने से और क्या करने से और किस का सहारा लेने से मेरी 'व्याकुलता, चिंता,

असह्य पीड़ा और रोग शोक दूर होकर मेरा शेष (बाक़ी) लवलेश जीवन थोड़ी ज़िन्दगी परोपकार के लिए अर्पण हो, जिस से पाप पिशाच लिप्त सारे संसार में पवित्रता की निर्मल धारा का चश्मा जारी हो। ऐ देवी ! मैं धन दौलत, माल ख़ज़ाना, इज़्ज़त संसार के यावत् (जितने) वैभव, सुख, आराम, भोग विलास, राज पाट, स्त्री पुत्र, हीरा पन्ना, जवाहिरात मुक्ति, स्वर्ग, वैकुण्ठ आदि नहीं चाहता, यदि अति दरिद्री (कङ्गाल), दुःखी भी हो जाऊंगा तो भी ये तुच्छ पदार्थ किसी से नहीं माँगूंगा। पर यह चाहता हूँ कि मेरे शुभ संकल्प (नेक ख़्यालात) से सारा ब्रह्मांड भक्त बन जाय। मैंने संसार में आकर उपकार कुछ भी नहीं किया। यह शोक मेरे हृदय से दूर हो, और मेरे किंचित् थोड़े जीवन से अनन्त फल संसार में अर्थात् सुख शान्ति फैले। यही मेरी अन्तिम तीव्र आख़िरी इरादा (अभिलाषा) है। ऐ देवी ! किसी तरह से क्या यह पूर्ण हो सकती है ? उस दुःख की दशा में पड़े हुए उस मनमोहन की करुणामय वाणी सुन सुमति देवी दयाभाव से भर कर बोली। ऐ पिता के नयनों के तारे मनमोहन ! तुम प्रणव स्वरूप ब्रह्म और

के वाच्य लक्ष के दर्शनों की प्रार्थना करो। तुम्हारे मन के मनोरथ पूर्ण होंगे। वह अपने भक्तों की, सेवकों की, इच्छानुसार वे इरादे के मुताबिक—फल देते हैं। वे नित्य शुद्ध, मुक्त स्वभाव भक्तों के प्राण प्यारे हैं। वे ईश्वरों के ईश्वर हैं। राजों के महाराजा हैं। वही तुम्हारी पूजा उपासना करने के योग्य देव हैं। वे सर्वशक्तिमान् हैं। उनके शरीर इन्द्रिय आदि नहीं हैं। वही सर्वज्ञ और सब के हृदय के सारे भावों को जानते हैं। उनके समान निस्स्वार्थ प्यार करने वाला इस सारे संसार में कोई भी नहीं है। वही स्वामी अन्तर्यामी सब जगत् के नियंता—चलाने वाले हैं, उन की अनन्त शक्तियां अनन्त कार्यों को कर रही हैं। उनका बल, ज्ञान, कर्म स्वाभाविक है। उनका प्रत्यक्ष कोई निशान वा चिह्न भी नहीं दिखाई देता। तो भी सारा संसार उनको ही बता रहा है। और उनका ही सारा संसार यश गा रहा है। न उनका कोई कारण है, न उनका कोई मालिक है। सारी दुनिया उन की प्यारी प्रजा है। वही सब के माता, पिता, कर्ता, धर्ता, हर्ता, सर्वशक्तिमान् हैं। ऐसे महान् पिता जी के जो हाथ जोड़ कर चरणों में गिर पड़ते हैं, उनको कोई भी दुख, दर्द, पाप, संताप नहीं सताता। वह मृत्यु से

भी नहीं डरते हैं। जो उनका आश्रय लेता है, उसे व
स्वीकार कर छाती से लगाते हैं। उस समय उस
सामने मृत्यु सुख स्वरूप मङ्गलमय दिखाई देते हैं
रोग शोक उसके पास नहीं आते। तृष्णा अग्नि उस
हृदय से निकल जाती है। वे स्वयं शांति के अख
बन जाते हैं। संसार के कमीने भाव तो उन्हें
नहीं सकते। ऐसी संसार में कौनसी कामना, कौन
वर है कि उन के भक्त नहीं पा सकते। उस प
पिता से बढ़ कर और कौन उदार वा दानी हो
जो जिज्ञासु अपने हृदय के पापों की गाठों को ख
उन की शरणागत होता है। वह उन के सर्वस्व
अधिकारी बन जाता है। वह कभी अपने भक्तों
नहीं छोड़ते। सदा अपने भक्तों पर अमृत की ल
तार मूसलाधार वर्षा बरसाते हैं। उनके द्वारे
सदा शांतिमय गङ्गा की निर्मल धारा बह रही
उनके चरणों में जाने से सब पापों के मल ध
जाते हैं। हृदय में प्रकाश और नया जीवन मिल
है। वह महाघोर पापियों का भी परित्याग नहीं क
हैं। बस, अवसर ही देखते रहते हैं कि कब मेरी अ
मेरे प्यारे पुत्र आते हैं। वही जगत् पिता और म
पापियों का परित्राता है। वह किसी पुत्र को

अपनी गोद से अलग नहीं रखना चाहते, बिना उन की शरण जाय कोई नर नारी पाप मृत्यु शोक और भय से नहीं बच सकता है। वह किसी से घृणा (नफ़रत) वा गुनाह खता का ख्याल नहीं करते। आओ जीवन का कुछ भरोसा नहीं है। उनकी शरण में चलें, वे अपनी दया की गोद फैलाए तुम्हारी प्रतीक्षा (इन्तज़ारी) कर रहे हैं। चिन्ता, शोक, भय, और मृत्यु से बचने के लिए मिथ्या और क्षुद्र साधनों को मत खोजो। ऐ व्याकुल युवा! तेरे भीतर वह विराज रहे हैं। प्रेम से उन्हें एक बार पुकारो तो सही, तुम्हारे सामने अभी प्रकट होते हैं, और शीघ्र ही तुम्हारे शोक, फ़िक्र, चिन्ता, मृत्यु और भयादि सब दूर करते हैं। तुम उन्हें प्रणाम करो और मुख से कहो मैं तुम्हारा हुआ। तुम्हारे अधीन हुआ। मेरा सर्वस्व तुम्हारे अर्पण है। हमें अपना प्यारा पुत्र सदा बना कर रक्खो। मेरे हृदय को अपनी भक्ति, श्रद्धा, प्रेम और विश्वास से भरदो। ऐ युवा मोहन! वह परमात्मा प्राणों के प्राण, जीवन के जीवन स्वरूप हमारे सब के हृदय-मन्दिर के देवता हैं। वह तुम्हारे आत्मा में अमृत स्वरूप हो व्यापक हो रहे हैं। तुम विनय भाव और आतुर मन से उनके दर्शनों की प्रार्थना करो। वे अवश्य दर्शन देंगे।

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया
न बहुना श्रुतेन। यमेवैष वृणुते तेन
लभ्यस्तयोरेष आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम्॥

यह आत्मस्थ ब्रह्म उपदेश से प्राप्त नहीं होता। मलिन बुद्धि से भी नहीं मिलता, बहुत सुनने से भी नहीं जाना जाता। यह जीवात्मा जिस आत्मा ब्रह्म की प्रार्थना करता है वह उसे प्राप्त होने योग्य है। यह आत्मा उसके लिए यथार्थ स्वरूप को प्रकाश करता है, केवल प्रार्थना और उपासना से वह प्राप्त होने योग्य है। ऐ जिज्ञासु बेटा! वह तुम्हारे सामने अवश्य अपनी मङ्गल ज्योति का प्रकाश करेंगे और तुम्हें अपने धर्म का सीधा रास्ता बतला देंगे। पहले ऋषि मुनियों ने धर्मपथ को छुरे की धारा के समान तेज और कठिन बताया है। ऐ प्यारे युवा! पर सर्व धर्मों को छोड़ कर परम पिता जी की शरण में आने से—

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुचः॥

अति कठिन, विकट, दुर्गम और भयङ्कर भी अति सुगम, अति कोमल हो जाता है। ईश्वर की आज्ञा में धर्म-पथ पर चलने वाले को सुख दुःख की वा हानि लाभ की चिन्ता छोड़ देनी चाहिए। धर्म सुख से भी बढ़ता है और दुःख से भी बढ़ता है। सम्पत्ति और विपत्ति में भी धर्म उन्नति पाता है, इस लिए विपत्ति को, दुःख को धर्मात्मा भक्त जन बिना अरुचि प्रभु की आज्ञा समझ अपने गले लगाते हैं। इसलिए ऐ प्यारे मोहन! तुम्हें खुशी से त्याग स्वीकार करना होगा। परम पिता जी की आज्ञा पालन में तन-मन-धन और जीवन तक भी दे देना होगा। पर-स्वार्थ में लव लगाए भक्ति, पूजा, भजन, जप, तप, दान, व्रत करना केवल महा पाप है। मैं कुमति के समान थोड़े दिन ठहरने वाली झूठी-झूठी थोथी बातों की और सुख भोग की उम्मेद तुम्हें नहीं देती। यह सच है कि धर्म सुख से भी होता है पर केवल इस दुनिया के भोग विलास भक्ति का असली फल नहीं हैं। दुनियावी क्षण भंगुर सुख, धर्म का फल कभी भी नहीं हो सकते। जो सुख सोने चाँदी से मिलते हैं वह तो चोर, डाकुओं, ठगों और बदमाशों को भी मिल सकते हैं। क्या परमपिता जी की भक्ति
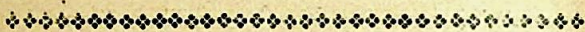
वा आज्ञा-पालन धर्म का यह फल हो सकता है ? धर्म वा भक्ति का फल परमानन्द की प्राप्ति, अनन्त जीवन का लाभ, धर्म का फल स्वयं ईश्वर की शान्तिमय गोद, धर्म का फल परोपकारमय जीवन है। इस लिए हृदय की प्रीति को उज्ज्वल कर हृदयेश्वर के प्रेम के सांचे में ढल जाओ। अपनी नीच कामनाओं को छोड़ प्रभु के प्रेम-सागर में गोता लगाओ। तुम अपने लिए कुछ मत रक्खो, सब कुछ उन का उन के ही हाथ में दे डालो। वह करुणाभण्डार सब मनोरथ पूर्ण करेंगे। यह शीतल शान्ति-दायक उपदेश सुन, वह नौजवान बोला—ऐ देवी ! तुम्हारा उपदेश भी धन्य है। तुम भी धन्य हो। मुझ पर आपने अपार कृपा की है। इस का धन्यवाद देना मेरी शक्ति से बाहर है। ऐ सुमति देवी ! पर आप मुझे यह बताओ कि मैं अब क्या कर सकता हूँ। मेरा रहना इस संसार में बहुत कम होगा। मेरे शरीर को बीमारी ने चारों ओर से इस समय घेर लिया है। प्यारे प्रभु का हुकम-नामा मेरी यहां से तबदीली का आने वाला है।

मुझे इस परिवर्तनशील संसार से सदा के लिये सम्बन्ध तोड़ना और इस दुनिया के झूठे मोह-जाल जंजाल को छोड़ना होगा। पर मेरे हृदय में

एक बड़ा भारी पछतावा है कि मैं इस संसार को कि जिस में मेरे सब भाई बहन वा माता पिता ही भरे हुए हैं उन्हें मैं दुःखों में ग्रसित छोड़े जाता हूँ। आह !!! माता जी यह संसार जो आज कल एक दुःख सागर मालूम हो रहा है, यह सुख-सागर और स्वर्ग-धाम में बदला जा सकता था। पर मैंने खान-पान के सिवा इस चलती सराय में रह कर कुछ भी उपकार न किया। इसी का मुझे बड़ा सोच है कि मैं इन तमाम भाई बहनों और माता पिताओं के दुःख की निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति का कुछ उपाय वा प्रयत्न न कर सका। आह !!! माता जी इस से मुझ को बड़ा क्लेश, अति शोक, दारुण कष्ट हो रहा है। हृदय-विदारक संताप-दायक युवा के वचन सुन अत्यन्त करुणा से पूर्ण हो सुमति बोली, उस समय चारों ओर फूलों की वर्षा होने लगी। सुमति ने यह श्लोक पढ़ा—

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था
विश्वम्भरा पुण्यवती च तेन ॥

ऐ प्यारे बेटा ! तेरा कुल पवित्र है, जिस मां के गर्भ से तू पैदा भया, वह भी धन्य है। जिस जगह पर तू

रहता है, सो देश भी धन्य है। ऐ मेरे प्यारे नयनों के तारे बीमार बेटा ! धन्य धन्य, तेरा अन्तिम (अख़ीर) नेक इरादा, शुभ संकल्प और शुभ वासना नेक ख़याल है। ऐ ख़ुशनसीब बेटा ! तू क्यों शोक करता है, मैं सत्य कहती हूँ कि तुझ से अब भी सारे जगत् का अनन्त उपकार होगा क्योंकि तेरे पिता के भण्डार में कोई कमी नहीं है। "भरे हैं भण्डार पूर्ण टूट नहीं किसी वस्तु की"।

मुहूर्तमपि जीवेत नरः पुण्येन कर्मणा।
न कल्पमपि पापेन लोकद्वयविरोधिना॥

उज्ज्वल पवित्र काम करते हुए मनुष्य का दो घड़ी का भी जीना अनन्त वर्ष के समान जीवन है। दोनों लोकों का बिगाड़ने वाले पाप काम के करते हुए कल्प पर्यन्त (बहुत सदियों तक) अर्थात् करोड़ों वर्ष जीना भी तुच्छ और व्यर्थ है। ऐ मेरे प्राण प्यारे मोहन ! यदि तू प्रभु की शरण में आ जायगा तो तेरा पल भर का भी जीना अनन्त वर्षों से भी कई गुना बढ़ कर होगा। प्रभु में लवलीन तेरे यत्-किंचित (ज़रा से) जीवन से सुखशान्ति कल्याण

और नवजीवन असंख्यात जीवों को मिलेगा, इसके बाद वाह वाह की ध्वनि से कमरा गूञ्ज उठा और फिर पुष्पों की वर्षा होने लगी। सुमतिदेवी जी के ऐसे ऐसे सारगर्भित अमृत रस भरे मुर्दादिलों में जान डालनेवाले महा गम्भीर अर्थवाले मधुमय मीठे वचन सुन मोहिनी मूर्ति नौजवान आनन्द में निमग्न (डूब) हो गया और उसके होठों पर एक अलौकिक मुस-कराहट दिखाई देने लगी। चेहरे से एक अजीब क़िस्म का नूर और दिव्य प्रकाश झलकने लगा। ऐसा मालूम होता था कि मानों मोहन का रोम-रोम प्रभु का धन्यवाद गा रहा है और वह पुकार-पुकार कह रहा है कि प्यारे प्रभु, मैं अपने समस्त संसार के भाई बहनों और पिता माताओं को आपके सिपुर्द करके बिल्कुल बेफ़िक्र हो गया हूँ। निश्चय और अवश्य आप मुझ अपने प्यारे पुत्र के इस समय के भावों और इच्छाओं को जान कर अत्यन्त प्रसन्न हो रहे हैं और निश्चय करा रहे हैं कि अनेक प्रकार के यत्न आपकी कृपा से प्रकट होंगे, जिससे सम्पूर्ण जगत् में प्रेम और पवित्रता फैलेगी और इस समय में फैलनी प्रारम्भ हो गई है। आपकी शक्तियां मेरे भीतर भर गई हैं और भरती चली जारही हैं। मेरे रोम-रोम से निहायत पाक

असर निकल-निकल तमाम ब्रह्माण्ड को पवित्र कर रहे हैं । भक्ति की बाटिका में उत्तम खाद दिया जा रहा है, जो सदैव अपना काम करता रहेगा और धीरे धीरे यह बाग अनन्त काल तक बढ़ता हुआ अपने पत्तों, फलों, फूलों और छाया से सच्ची शान्ति देता रहेगा और साथ ही साथ यह भी मालूम हो रहा है कि मानों अपने प्यारे बच्चे अपने हृदय के टुकड़े को इस पूर्णशान्ति और पूर्णानन्द दायक विश्वास की दशा में देख अत्यन्त आनन्द में भर बड़े प्रेम और हुलास के साथ यह कह रहे हैं, तथास्तु, मेरे प्राण प्यारे बेटा तथास्तु:—इसके बाद उसके जो प्रेमी वहां मौजूद थे उनसे उसने इच्छा की कि इन दो भजनों को गावें और जब वे गाने लगे तब आप भी मोहन आंसू भरी आंखें खोल परम प्यारे प्रभु के प्रेम से अपने हृदय को भर अपनी धीमी, पर अत्यन्त सुहावनी आवाज़ और गद्‌गद्‌ स्वर से उनके साथ शामिल हो आप भी गाने लग गये ।

❀ भजन ❀

ऐसे तुम दीनानाथ पापी परित्राता हो—टेक
दीन दुखिया पापी दुर्बल सब के मुक्ति दाता हो । १ ।

एकमात्र तुम्हीं स्वामी देवी शक्ति और सहारा हो। २
सबके जीवन आश्रय स्वामी धर्म के विधाता हो। ३
सबके पालन हार प्रभु बुद्धि ज्ञान दाता हो। ४
बन्धु भ्राता मित्र तुम्हीं, तुम्हीं पिता माता हो। ५
अमृत आधार हरि मृत्यु संजीवन त्राता हो। ६
नवजीवन आनन्द और पवित्र जीवन दाता हो। ७

प्रेम के आंसू बहते बहते यह गीत पूरा हुआ। फिर मनमोहन ने परम पिता जी से वेद मंत्र से प्रार्थना की।

यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति।
स्वर्यस्यच केवलं तस्मै जेष्ठाय ब्रह्मणे नमः॥

हे सर्व व्यापक स्वामिन! जो कुछ भूत, भविष्यत् और वर्तमान में है उस सबके अधिष्ठाता तुम हो, वायु तुम्हारी आज्ञा से चलती है, आग तुम्हारी आज्ञा से जलती है, तुम्हारे शासन में सूर्य्य चन्द चमकते, मेघ बरसते हैं। आप इस सबके जीवनदाता हो। जो आंख खोलता है और सांस लेता है उन सबके आप प्राणपति हो। आप इस सारे संसार से परे केवल सुख स्वरूप हो। मेरा आपको बारम्बार प्रणाम है। आप सबसे बड़े और सब के पूज्यदेव हो। इस

प्रार्थना के उपरान्त मौन रह प्रभु के ध्यान में लवलीन हो गए परन्तु प्रफुल्लित कमल की नाईं उनका चेहरा खिल खिला रहा था। मानों, बहुत दिन के प्यासे संतप्त सूखे हृदय को पिता के शीतल जल-रूप दर्शन उसे तर कर रहे थे। फिर थोड़ी देर के बाद प्रेम-आंसू-पूर्ण नयन खोल यह गीत गाया।

सुन्दर सरूप तुम्हारा कैसा लगे ये प्यारा। टेक।
देखे जो एक वारी वे नर होवे सतिवारा। १
वरनो सिफ़त कहां तक वाह वाह शानो शौकत। २
दिल चाहता है देखे दिन रात ये नज़ारा। ३
वो मुसकराता चेहरा सनमुख रहे हमारे। ४
इसकी एवज़ में चाहे सर्वस लेलो हमारा। ५
चारों तरफ़ से तुमको घेरे हुए हों हम सब। ६
छवि निरखे प्यारी प्यारी जय जय का मारे नारा। ७
तेरा अद्भुत स्वरूप शान्ति का है भण्डारा। ८

ऐ सबके अन्तरात्माओं की व्यथा जानने वाले परम पिता! आपकी करुणा का सागर उमड़ उमड़ मौजें मार रहा है। ऋषि, मुनि, योगी, और भक्त-जन आपकी महिमा गाते गाते हार गए, पर आपकी महिमा का वारापार न मिला। आपने मुझ बीमार बच्चे पर जो

कृपा की है, मेरे हृदय, क्षुद्र बुद्धि, तुच्छ वाणी में शक्ति कहां, जो इसे वर्णन करूं। हे हरि! मैं तो यह भी नहीं जानता था कि आपने मुझे किस लिये यहाँ भेजा था। आज मेरा मानव जीवन सफल हुआ। हे प्राणनाथ! आप की कृपा से अब मुझे कुछ उजर नहीं है, जिस देश में भेजो, जिस दशा में रक्खो, उसी में आपका मैं करुणा हाथ देखता रहूँ और वहां भी रहकर जिस में आप की आज्ञा का पालन हो वही करूं—जो सुख व दुःखरूप प्रसाद मुझे प्रदान करोगे मैं उसे बड़ी प्रसन्नता से सिर पर उठाने को तैय्यार रहूँ। हे नाथ! जैसे और आप के गुण अनन्त हैं, ऐसा आप का प्रेम भी अनन्त है। अब परमपिता जी मुझ छोटे बच्चे को यही वरदान दो कि मेरी चित्तवृत्ति जब तक मैं इस संसार में घड़ी पल रहूँ आप के चरणों में लगी रहे। अहा! मैं कैसा खुशनसीब आपका लाड़ला बेटा हूँ।

❁ भजन ❁

अब तो तुम्हारी लौ लागी ॥ टेक ॥ मन में हुआ उजियाला दया करी मेरी क़िस्मत जागी। तुम्हारी शरण जब लीनी कौन है मुझसा बड़ भागी। तुमको न एक छिन विसारूं सदा रहूँ चरण अनुरागी।

हे प्रेम के सागर! आप का अपार, बेशुमार प्रेम अब मुझे सब जगह दिखाई देने लगा। हे प्रेम के स्रोत! हे प्रेम के आधारपिता! मुझें तुम्हारी कृपा से यही लोक मेरे लिये देवलोक बन गया है। ऐ दया-मय हरि! ऐसी इस बच्चे पर दयादृष्टि करो कि विपत्ति में, संपत्ति में, दुःख में, सुख में, आपका सदा ध्यान मेरे मन-मन्दिर में बना रहे, आपके प्रेम में मग्न हो जो मेरे नयनों से जल-बिन्दु गिरे, वही आप की पूजा का पवित्र-वारी (पाक जल) हो। वही आप की स्वीकृत पूजा प्रेम-वारी सारे संसार में फैल जाय और सम्पूर्ण जगत् को तृप्त करे। मेरा यह किञ्चित् शेष (बाक़ी) का जीवन आप के प्रिय कार्यों के साधन में व्यतीत हो। हे परमेश्वर, हृदयेश्वर, जीवन के सार! जब मेरी यहाँ से तबदीली हो तब मेरे विश्राम के लिये केवल अनन्त सुख शान्ति भरी आपकी गोद ही स्वर्गधाम है। सदा समय धर्म की जय हो, पापका क्षय हो, परोपकारमय सब नरनारी का जीवन हो, स्वार्थपरता, खुदगर्ज़ी का सत्यानाश हो। इस के बाद धन्य धन्य माइन, यह ध्वनि गगनमण्डल में चारों ओर से गूंजने लगी और देवतागण फूलों की वर्षा करने लगे।

❀ भजन ❀

जहाँ देखूं तहाँ प्रेम तुम्हारा ॥ टेक । चान्दसूर्य्य नक्षत्र पृथिवी सब यह काम संवारे हमारा । १ । कहीं फल फूल अन्न और मेवा, कहीं गंगा जमन की बह रही धारा ॥ २ ॥ आंख कान और हाथ पैर सब काम करें तुम्हारा ॥ ३ ॥ कहाँ तक दया वरनन करूं स्वामी तुम्हारा प्रेम है अपरम्परा ॥ ४ ॥

बीच में श्रोता लोग आनन्द में मग्न हो वाह वाह करते हैं । सुमति देवी नृत्य करती और गीत गाती है ।

धन्य मोहन भाग तुम्हारे, परमपिता के परम पियारे ।
तुम हो जगत उधारनहारे, तुम पुन्य कमाय बहुभारे ।
प्रभु प्रसन्न भये हैं सदारे, तुम जगके सेवक हो उजारे ।

यह सुमति का गीत सुन मोहन गद्गद् फिर यह प्रार्थना महाप्रभु जी से करने लगा, ऐ परम प्यारे पिताजी ! आप की दया से सब ब्रह्माण्ड के नरनारी आप के भक्त बन जाँय । सब के हृदय में सदा शुभ से शुभ, शुद्ध से शुद्ध संकल्प उत्पन्न होते रहें । सब के जीवन बड़े बड़े फलदायक बनें और समस्त संसार स्वर्गधाम बन जाय । आपकी मंगलेच्छा पूर्ण हो । मुझे तो (जहाँ बैठाओ तहाँ बैठूं, स्वामी जहाँ भेजो तहाँ

जाऊं) यह उस समय की मनमोहन युवा की प्रेमाश्रुभरी प्रार्थना सुनकर परम पिता जी ने बड़े प्रेम और धीमी महागम्भीर आवाज़ से मोहन को आशीर्वाद और वरदान दिया। अहा ! यह कैसा खुशी का समय है। ऐ प्यारे मोहन बेटा ! तू विश्वास कर, तेरा मिशन, तेरा शुभ संकल्प, समस्त ब्रह्माण्ड में अपना असर अपनी पावनता की शक्ति, और उपकार फैलायगा। तेरे मंगलभाव, पवित्र भावना, शुभेच्छा अवश्य पूर्ण होगी। इसमें संदेह करना महा पाप है।

❀ भजन ❀

पूरा हुआ जो कुछ तुमने चाहा ॥ टेक ॥ पापी महापापी हत्यारा पार हुआ जो शरण में आया ॥ सुख आनन्द मिला उसको मुक्ति हुई फिर कष्ट न पाया ॥ २ ॥ तेरा दुःख भला देख सकूं मैं और फिर तूने मुझ से नेह लगाया ॥ ३ ॥ पिता हूँ मैं तू है प्राण-प्यारा, प्रेम बस हो यह भेद बताया ॥ ४ ॥

यह परमदेव परमेश्वर की आशीर्वाद रूप हृदय-आकाश में वाणी सुन युवा मोहन प्रसन्न मन हो हँसता हँसता अपने परम प्यारे पिता की गोद में चिरकाल के लिये बैठ गया।

अब मैं पाठकों से अपने हृदय के भावों को प्रकट करता हूँ। पहले—यह युवा मनमोहन कौन है, जिस का नाम इस प्रसंग में आया है। पाठकों को मैं यह बताना चाहता हूँ—जिन का चांद सा शीतल हृदय पावन भावों और शुद्ध संकल्पों से भरा है, जिन के स्वभाव में सरलता, नम्रता, हानि-लाभ में समता प्रसन्नता और कमलसी कोमलता झलकती रहती है, जिन का आत्मा क्षमा, दया, समस्त लोक हितैषिता, निरभिमानता, और उदारतादि दैवी गुणों से भर रहा है, जिनकी वाणी में हमेशा अमृतमय हरि-प्रीति और आकर्षण रूप मोहिनी शक्ति भरी है—जिन का ध्यान में स्थित मूर्ति के दर्शनों से त्रिताप संतप्त चिन्ता ग्रस्त चञ्चल चित्त अति शान्ति पाता है, जिनके मन में सारे संसार की सेवकाई, परोपकार करने की इच्छा सदा विराज रही है, जो सदैव प्राणी-मात्र को कि जिनको वे भाई समझते हैं और सब को अपने से अधिक परमपिताजी का आज्ञाकारी सुयोग्य पुत्र तथा उनको परमानन्द मग्न में देखना चाहते हैं, जिन के संभाषण में मधुरता और नव जीवन प्राप्ति की निर्मल गंगा की सी लहरें उठती रहती हैं, उन्हीं सच्चे ईश्वर-प्रेमी, दृढ़ विश्वासी परमभक्त देहरादून

निवासी श्रीमान् भक्तराज लाला बलदेवसिंह वैश्य कुल-भूषण जी के होनहार मोहन, जिन का नाम इस पुस्तक में आया है इकलौते प्राण प्यारे पुत्र थे। यह बीमारी की दशा में पड़े थे और उन का चोला बदलने का समय अतिनिकट आ गया था। उस समय जब वह बहुत व्याकुल तथा क्लेशित हो रहे थे, तब भक्तराज उन के पिता "बल*" ने कहा कि ऐ प्यारे! मोहन बेटा, क्यों इतनी तकलीफ़ पा रहे हो, तुम्हें परम पिता जी अपने पास बुलाते हैं—तो क्यों नहीं उनके हुक्म के मुताबिक उनके दर्बार में चले जाते, यह वचन सुन कर चारों ओर से धन्य धन्य सब करने लगे। अहो बलदेव, तेरा धैर्य धन्य, धन्य तेरा विचार, धन्य है तेरी आश्चर्य ईश्वर में भक्ति, धन्य २ तेरी सहन-शीलता, धन्य २ तेरी दुःख सुख में, हानि लाभ में समता। ऐसे वचन कहते २ सब समीपवर्त्ती लोगों की आंखों से आंसू की धारा चतुर्मास की झड़ी के समान छमाछम बरसने लगी। तब यह वचन सुन प्रणाम पूर्वक पिता जी से मोहन बोले—ऐ मेरे प्यारे पूज्य भक्तराज पिता जी, मैं जगत्पिता की गोद में बड़ी खुशी से जाने

---

* यह संपादक लाला बलदेवसिंहजी को प्यार से बल पुकारा करता है।

को तैय्यार हूँ—पर इस समय में मेरे मन में संकल्प रूप एक तीखा तेज कांटा सा चुभ रहा है। वही मेरे अति कष्ट तथा व्याकुलता का कारण है, तब भक्तराज बोले—

वत्स ! ऐ मेरे प्राणधन ! मोहन बता तो सही वह बेटा कौन सा संकल्प रूप कांटा तुझे इस समय अत्यन्त पीड़ा या दुःख दे रहा हैं—एक श्लोक सुनाकर मोहन बोलता है—

पुनर्वित्तं पुनर्मित्रं पुनर्भार्या पुनर्मही ।
एतत् सर्वं पुनर्लभ्यं न शरीरं पुनः पुनः ॥

ऐ पिता जी ! यह धन फिर मिल जायगा, मित्र फिर मिल जायंगे, स्त्री भी फिर मिल जायगी, पृथ्वी भी मिल जायगी, पर यह मनुष्य का चोला बार बार नहीं मिलता। हा शोक ! ऐसा दुर्लभ मानव-शरीर मुझे मिला था, ऐसी अमूल्य चिन्तामणि पाकर मुझसे संसार का उपकार कुछ भी न हुआ। मेरा इस संसार में आना, मनुष्य जन्म पाना, और माता को नौमास कष्ट देना सब व्यर्थ हुआ। पिता जी एक यही पछतावा मेरे हृदय को तपा रहा है और अति पीड़ा दे रहा है।

यह इकलौते होनहार प्राण प्यारे युवा मोहन की परलोक यात्रा के समय का शोकार्त करुणामय वचन सुनकर भक्तराज, जो ईश्वर की आज्ञा को ही केवल धर्म मानने वाले और उनकी आज्ञा में खुश रहने वाले उनके पिता बल बोले—ऐ सोहनी सूरत मोहिनी मूरत बेटा ! तुम यह दृढ़ विश्वास रखो कि मैं तेरे इस मंगलमय शुभ और शुद्ध संकल्प को पूरा करने के लिये आज विषय प्रवाह से अपने मन को हटा तेरे आख़िरी शुभ संकल्प को संसार में फैलाने के लिए तन, मन, धन और समस्त जीवन अर्पण करता हूँ। मैं इस प्रतिज्ञा का सारे जीवन तक पालन करूंगा। मोहन अपने प्यारे पिता जी के मुख से यह वचन सुन अपनी दुःखनिवृत्ति के लिये तथा मनोरथ सिद्धि और अपने मिशन की गाड़ी का जूआ अपने प्यारे भक्तराज पिता के कन्धों पर डाल कर अनन्त सुख शांति-निकेतन (घर) दयासागर परम पिता की गोद में सदा के लिये हंसते हंसते जा विराजे। हे मंगल इच्छा पूर्ण कर्ता प्यारे पिताजी ! ऐसी कृपा करो कि युवा ! मोहन के समान शुभ संकल्प करने वाले पुत्र और ईश्वर की आज्ञा में खुश रहने वाले बल के सदृश पिता

सब को दो। पाठकों से मैं यह निवेदन करता हूँ कि वह जिस परम पिता के प्यारे पुत्र थे और जिसने उन्हें अपनी गोद में सदा के लिये बुला लिया है तो क्या उसके साथ ही उसके मिशन वा संकल्प रूप बीज का नाश हो गया ? नहीं नहीं, प्यारे पाठक-गण ! वह बीज किसी नर नारी का बोया हुआ न था कि जो दो दिन की धूप से वा चिड़ियां आदि जान-वरों से विनष्ट हो जाय क्योंकि उसकी रक्षा करने वाले उस के भक्तराज वल मौजूद हैं। अब वही परोपकार रूप बीज पौधे के रूप में बदल गया है। आशा है कि थोड़े ही समय में यह महान् वृक्ष हो जायगा जिसके नीचे पाप ताप से तप्त सारे संसार के नरनारी शीतल छाया में विश्राम पायेंगे।

द्वितीय—सुमति और कुमति जिनका नाम है, ये दो देवियां कौन हैं, यह वे दो देवियां हैं कि जो मनुष्य के हृदय रूप युद्धक्षेत्र में दो ख़याल नेक और बद, विद्या वा अविद्या, सुमति वा कुमति श्रेय प्रेय, धर्म वा अधर्म का देवासुर संग्राम (लड़ाई) सदा ही होता रहता है। इन्हीं दोनों शक्तियों वा दो संकल्पों का नाम ही देवियां रक्खा गया है।

तृतीय—लहलहाती अति सुन्दर मनोहर वाटिका कौन है ? प्रिय पाठक ! यही सारा संसार लहलहाता

बाग है जिसमें जीव ही मनमोहिनी मूर्ति युवा पुरुष है। सारग्राही पाठकों से मैं यह विनयपूर्वक प्रार्थना करता हूँ। यथा कमल पुष्प में प्रत्यक्ष तीन गुण देखने में आये हैं। एक सुगन्ध, दूसरी सुन्दरता, तीसरी कोमलता। इसी प्रकार इस पुस्तक में भी कठोपनिषद् की श्रुति में यम राज तथा नचिकेता की कथा, १–स्वर्गवासी युवा मोहन की अन्त समय की पिता से बात चीत का सार-भाव और २–मेरी समझ और मेरे हृदय का भाव, ३–यह फूल के आकार में तीन भावों से मिश्रित पुस्तक बना है। अब अन्त में परम पिता जी से प्रार्थना है—हे दयामय हरि ! यह पुष्प आप के चरणों में भेंट किया गया है। इस पुष्प को आप स्वीकार कर तथा इस पर आशीर्वाद दो और इसको अपनी प्रिय सन्तान के लिए उपकारी बनाओ, जिससे इसकी सुगन्धि सर्वत्र फैल जाय। इस दास प्रकाश की तुच्छता से जो इस पुस्तक में कमी रह गई हो, उसे आप अपनी पूर्ण कृपा से पूर्ण कीजिए, जिससे सब पाठकों के हृदयों में सुन्दर से सुन्दर, पवित्र से पवित्र और उच्च से उच्च बड़े बड़े, उत्तम से उत्तम संकल्प पैदा हों और होते रहें, जिससे संसार स्वर्ग-धाम बन जाय।

हे मेरे परम प्यारे पिता जी ! इस समय मैं विचार और विश्वास की आंखों से आप के सुन्दर परम दयालु चेहरे पर एक अत्यन्त दर्जे की अलौकिक और अनोखी प्रसन्नता की मुस्कराहट देख रहा हूँ, आपके आशीर्वाद की मूसलाधार वर्षा मुझे प्रतीत हो रही है, निश्चय और अवश्यमेव अपने इस दास के काम को बहुत ही बहुत फलीभूत करोगे। मैं विश्वास और विचार के कानों से सुन रहा हूँ कि आप पितृ-प्रेम से भर तथा मातृ-स्नेह से पूर्ण होकर यह कह रहे हो

"तथास्तु प्रियपुत्र एवमस्तु बेटा"

यतो धर्मस्ततो जयः ॥

ओ३म् शांतिः शांतिः शांतिः ॥

आर्य साहित्य विभाग

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर

की

प्रभु भक्ति और सामाजिक सिद्धांतों पर पुस्तकें

ऋग्वेद शतक   **यजुर्वेद शतक**

सामवेद शतक   **अथर्ववेद शतक**

लेखक श्री स्वामी अच्युतानन्द जी महाराज—चारों वेदों से चार सौ मन्त्रों का संग्रह करके श्री स्वामी जी महाराज ने इनका बड़ा सुन्दर अर्थ किया है और साथ ही थोड़ी २ व्याख्या भी दी है प्रति गुटका की कीमत ।) प्रति सैट ।।।≡)

(१) प्रभु प्रेम संगीत ≡)

(२) आर्य्य भजन संग्रह (द्वितीय, तृतीय भाग) ।=)

(३) देव यज्ञ प्रकाश I)

(४) वेद में इतिहास नहीं III)

(५) सत्यार्थ प्रकाश भाष्य प्रथम समुल्लास I=)

(६) सत्यार्थप्रकाश भाष्य द्वितीय समुल्लास I)II

(७) यथार्थ प्रकाश की हकीकत उर्दू में II≡)

(८) षड् दर्शन समन्वय II)

(९) स्वामी दयानन्द जी के पत्र और विज्ञापन तीसरा भाग I=)

(१०) स्वामी दयानन्द जी के पत्र और विज्ञापन चौथा भाग I=)

(११) पतितों की शुद्धि सनातन है I=)

(१२) स्वामी दयानन्द और उनकी तालीम उर्दू में १I)

इसके अतिरिक्त आर्य्य सिद्धान्तों पर हर प्रकार की पुस्तकें इस विभाग से मिल सकती हैं। इन पुस्तकों पर निम्नलिखित कमीशन दिया जावेगा।

(१) एक बार १००) की पुस्तकें खरीदने पर ३३ ०/०

(२) एक बार ४०) ,, ,, २५ ०/०

(३) एक बार २५) ,, ,, २० ०/०

(४) एक बार १०) ,, ,, साढ़े १२ ०/०

(५) एक बार २) ,, ,, १० ०/०

केशोराम उपप्रधान सभा व अधिष्ठाता,

आर्य्य साहित्य विभाग आर्य्य प्रादेशिक

प्रतिनिधि सभा, लाहौर।